सत्य एँव अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

जुलाई-अगस्त, 2001

‘ नया आधार ‘

‘ उसने जनसमूह सहित चेलों को पास बुलाया और लोगों से कहा, ‘यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो वह अपने आप का परित्याग करे, और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे चले। क्योंकि जो अपने प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिए अपना प्राण खोता है, वह उसे बचाएगा। मरकुस (८-३४,३५) ’

रहस्य यह है। यदि कोई मनुष्य इस रहस्य को जान ले और इसके अनुसार जीये, तो उसकी उपयोगिता कई गुणा बढ़ जाएगी। लेकिन यह सिद्धांत हमारी मानसिकता के बिल्कुल विपरीत है। कौन ‘अपना’ त्याग करना चाहता है? कौन ‘अपने सुख’ को त्यागना चाहता है? कौन ‘अपने आराम को त्यागना चाहता है? कोई कुछ भी नहीं त्यागना चाहता। लेकिन, यहाँ पर प्रभु यीशु कह रहे हैं कि यदि हम सुसमाचार के लिए’अपना’ परित्याग करें तो अपने आप को बचा पाएँगे। प्रभु यीशु कहते हैं, वह न केवल अपने को बचा पाएगा बल्कि, सौ गुणा फल पाएगा। यह विषय हमारी १००० गुणा उन्नति का है। आइए, मत्ती के वचन की और देखें, ‘और प्रत्येक जिसने मेरे नाम के लिए घरों, या भाइयों, या बहिनों, या पिता या माता, या बच्चों, या खेतों को छोड़ दिया है, वह इस से कई गुना अधिक पाएगा और अनन्त जीवन का उत्तराधिकारी होगा। मत्ती (१९-२९)।’ क्या इनमें से किसी का भी त्याग करना सरल है? यदि किसी व्यक्ति के पास घर हो, क्या वह उसे खोना चाहेगा? क्या वह उसे त्यागना चाहेगा? क्या कोई व्यक्ति अपने भाइयों और बहनों या पिता या माँ या पत्नी या बच्चों से दूर जाना चाहेगा? इसमें से कुछ भी करना सरल नहीं है। लेकिन, हमारे हृदय की बुलाहट है कि सबसे बढ़कर अपने स्वामी से प्रेम करें। संसार कहता है, ‘ यह अपना अवसर खो बैठा है, अपने घर को खो बैठा है, इसने अपने दोस्तों को खो दिया है, इसने अपने माता-पिता को खो दिया है।’

लेकिन परमेश्वर इन सबको बढ़ाएगा। सुसमाचार के लिए अपना त्याग करना सीखो। कभी-कभी तुम अपने शरीर को थका महसूस करते हो। कई बार यह केवल तुम्हारा आलस है। तुम दूसरे लोगों को आराम में देखते हो, तो तुम्हारा मन भी लेटने को करता है। कुछ लोग सोचते हैं, ‘चलो, मैं काफ़ी थका हूँ, आज मैं बिना प्रार्थना किए सो जाता हूँ।’ इसका क्या नतीजा निकलता है? तुम नींद में बेहद अशांत हो जाते हो। यह तुम अपने दैनिक जीवन में अनुभव करोगे। अधिक नींद मिलने की बजाय तुम अपनी नींद खो बैठते हो। लोगों के जीवन में तुम यही देखोगे। लोग सोचते हैं, ‘मुझे यह ज़रूर पाना चाहिए, यह ज़रूर मिलना चाहिए।मैं अपने प्रार्थना के समय को दाँव पर लगा दूँगा। मैं अपने प्रार्थना जीवन को त्याग दूँगा।’ लेकिन वे सब कुछ खो बैठते हैं।

बाईबल कहती है,‘उसने उनकी लालसा के अनुसार उन्हें मांस खाने को दिया लेकिन साथ ही उनकी आत्मा को कमज़ोर कर दिया।’ अपनी आत्मा को कमज़ोर बना कर तुम क्या पाओगे? अत्यधिक सचेत रहो। आज के समय हमारे चारों ओर ख़तरनाक वातावरण है। आज का संसार हमारे ऊपर हक़ जमाता है। ‘मेरे पास यह होना चाहिए, वह होना चाहिए।’ और हम ‘सरकार पर और दूसरों पर’ यह आरोप लगाते हैं कि उन्हीं के कारण हमें सब कुछ नहीं मिला। लेकिन हम मसीह व्यक्ति दूसरों से भिन्न हैं। यदि परमेश्वर हमें कुछ देने से मना करते हैं तो हम उसे एक महान आशीष समझते हैं। हम सौ गुणा अपने पड़ोसी के लिए त्यागने को तैयार हैं। हम अपने पड़ोसी से प्रेम करते है। हम अपने पड़ोसी की ज़मीन के किसी भाग का लालच नहीं करते । इसके विपरीत हम यह सोचते हैं ‘ हम उन्हें क्या दें? ’ अब यह पाठ हमें एक-एक करके सीखना है। नहीं तो हम अपना जीवन मसीह के लिए नहीं लगा पाएँगे। हमें छोटे-छोटे त्याग के अनुशासन द्वारा आरंभ करना चाहिए। इस प्रकार जब बड़ी चीज़ों की भेंट करने का समय आएगा, हम वह भी कर पाएँगे। क्या हम अपनी कुछ नींद त्यागने को तैयार हैं, और सुसमाचार के लिए कठिन परिश्रम करने को तैयार हैं? यदि नहीं, तो हम परमेश्वर का दिया कार्य नहीं कर पाएँगें। जो अपने को बचाना चाहेगा, वह अपने को खो बैठेगा। उनका जीवन व्यर्थ ही जाएगा। जो अपना त्याग करना सीखेंगे, वे अधिक उन्नति देखेंगे। यह मूल सिद्धांत है, इसे सीखना हमारे लिए अति आवश्यक है। इस सिद्धांत को सीखे बिना हम परमेश्वर के राज्य को नहीं बढ़ा सकेंगे।

जो पहले चार बिशप भारत आए थे, वे बुद्धिमान व्यक्ति थे। उनमें दया भरी थी। कठोर परिश्रम के कारण नौ साल में ही चारों की मृत्यु हो गई। हम बिशप ‘हरबर’ का लिखा यह भजन गाते हैं, ‘ग्रीनलैण्ड के बर्फ़ भरे पर्वत’। बिशप हरबर की मृत्यु तिरुचिरापल्ली (दक्षिण भारत) में हुई। वहाँ के लोगों की सहायता करने के लिए वे काफ़ी समय तक उनके साथ रहे। उन्होने जाति-प्रथा के विरोध में आंदोलन छेड़ा। उनकी जल्द ही मृत्यु हो गई। जब अगले बिशप की आवश्यकता पड़ी, लंदन के पादरी उस पद को लेने से डर रहे थे। लेकिन एक पादरी आगे बढ़ा। जब (भारत) में वह अपने नए घर में आया तो वहाँ ठीक प्रकार से मेज़-कुर्सी भी नहीं थी। उसने ड्यूटी अफ़सर से पूछा, ‘ तुमने यहाँ ठीक तरह की मेज़-कुर्सी रखने की दिक़्क़त क्यों नहीं उठाई? ’ आदमी ने जवाब दिया,’ मुझे लगा कि यह महीने के लिए यह मेज़-कुर्सी आदि पर्याप्त रहेंगी।’ इसका अर्थ यह था कि उसने सोचा कि छह महीने में इस बिशप का देहांत हो जाएगा। लेकिन परमेश्वर ने उसे २२ वर्ष तक बचाए रखा।

यह लगता है कि उन लोगों कि तरह त्याग करने की हम कलपना भी नहीं कर सकते। यह सचमुच संभव नहीं है। वे परिस्थितियाँ अलग थीं, ’ उनके परिश्रम, कठिनाइयाँ और त्याग। हमारे त्याग उनके सामने कुछ भी नहीं हैं। उन्होंने अक्षरशः सुसमाचार के लिए अपना परित्याग करना सीख लिया था।

महान व्यक्ति। उन्होंने अच्छा आधार बनाया।

अब हमें नई नींव डालनी है। हमारे

मृत्युंजय ख्रिस्त
ON LINE
By Email:
lefipost@mailandnews.com
At our Web Site:
http://lefi.org

'आत्महत्या ' शैतान का, पराजय का महाद्वार है, परन्तु विजय और स्वतन्त्रता का 'द्वार' मसीह ही है।

समाचारपत्र दिखा रहें हैं कि समय अच्छा नहीं है। वे सांसारिक चीज़ों के विज्ञापनों से भरे हैं। लेकिन हमें इन चीज़ों की लालसा कर, उनका पीछा नहीं करना चाहिए। 'मैं अपने प्रभु के लिए और क्या कर सकता हूँ? ', ' मैं अपने जीवन को सुसमाचार के लिए कैसे दाँव पर लगाऊँ? '। परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने का केवल यही रास्ता है । हमें ऐसे व्यक्ति तैयार करने चाहिए, जो सुसमाचार के लिए अपना त्याग करने को तैयार रहें।

- जोशुआ दानियल।

वेदना द्वारा विकास

जब तक हीरे काटे न जाएँ वे सुंदरता से नहीं चमकते। तराशे जाने पर, सूर्य किरणें उन पर पड़ कर उन्हें अद्‌भुत रंगों द्वारा चमकाती हैं। जब हम क्रूस द्वारा सही आकार में काटे जाएँगे, तब परमेश्वर के राज्य में रत्नों की भाँति दमकेगें।

स्वीटजरलैण्ड देश में एक गड़रिये ने अपनी एक भेड़ की टाँग तोड़ डाली। जब उससे पूछा गया कि उसने ऐसा क्यों किया, उसने जवाब दिया कि इस भेड़ में दूसरी भेड़ों को भटकाने और उन्हें ख़तरनाक ऊँचाइयों और खड़ी चट्टानों पर ले जाने की बुरी आदत थी। वह भेड़ इतनी नाराज़ थी कि जब उसका रखवाला उसे चारा देने आता तो वह कभी-कभी उसे काटने की कोशिश करती। लेकिन कुछ समय पश्चात वह उससे प्रेम करने लगी, यहाँ तक की पास आने पर उसका हाथ चाटती थी। इसी प्रकार, दुखों और कष्टों का द्वारा, परमेश्वर अवज्ञाकारियों और विद्रोहियों को सुरक्षा और अनन्त जीवन के मार्ग पर लाते हैं।

- साधू सुन्दर सिंह।

'महान प्रार्थनामय लोग'

' प्रार्थना में बेहिसाब पिछड़ापन ही, मेरी आत्मिक कमज़ोरी और फल रहित होने का मूल कारण है। मैं सजग हृदय के साथ सुन सकता हूँ, लिख या पढ़ या बातचीत कर सकता हूँ। लेकिन प्रार्थना ही इन सबसे बढ़ कर सबसे आत्मिक और अंतर्मुखी है। ज़िम्मेवारी जितनी अधिक आत्मिक है, उतना अधिक मेरा दैहिक मन उसे करने को तैयार रहता है। प्रार्थना और धैर्य और विश्वास कभी निराश नहीं होते। बहुत
पहले ही मैंने यह सीख लिया था, यदि मुझे परमेश्वर का सेवक बनना है तो प्रार्थना और विश्वास ही मुझे ढालें। जब मैं हृदय में प्रार्थना की इच्छा और आज़ादी पाता हूँ, तब साधारणतया बाक़ी सब कुछ सरल हो जाता है। ' - रिचर्ड न्यूटन।

इसे आत्मिक सूक्ति का दर्ज़ा दिया जा सकता है कि हर सच्ची सफल सेवकाई में प्रार्थना प्रत्यक्ष एवं संचालक शक्ति है....संचालक एवं प्रत्यक्ष - प्रचारक के जीवन में, संचालक एवं प्रत्यक्ष - उसकी गहरी आत्मिक सेवा में।

जाग्रत सेवकाई भी प्रार्थना के बिना की जा सकती है, बिना प्रार्थना के प्रचारक ख्याति एवं प्रसिद्धि भी प्राप्त कर सकता है। प्रचारक के जीवन की मशीनरी बिना प्रार्थना के तेल और पहिये के दाँतों के लिए अपर्याप्त ग्रीस द्वारा चल सकती है। लेकिन प्रार्थना को संचालक, प्रत्यक्ष बनाए बिना कोई भी सेवा आत्मिक सेवा नहीं हो सकती। जोकि प्रचारक में और उसके सुनने वालों में पवित्रता ला सके।

प्रार्थना करने वाला प्रचारक निश्चय ही परमेश्वर को काम में सहभागी बनता है। परमेश्वर प्रचारक के काम में अपने आप भाग नहीं लेता बल्कि खास आग्रह पर। यह पश्चातापी और प्रचारक दोनों पर लागू होता है कि जिस दिन हम पूरे हृदय से परमेश्वर की खोज करेंगे उसे पाएँगे। प्रार्थनामय सेवा ही ऐसी सेवा है जो प्रचारक के हृदय में लोगों के प्रति करुणा पैदा करती है। तत्वतः प्रार्थना लोगों को एक करती है वैसे ही परमेश्वर के साथ भी।

प्रचारक के उच्च दायित्वों और कार्यों की सेवा की योग्यता - केवल प्रार्थनामय सेवा है। कॉलेज, किताबें, पढ़ाई, धर्म विज्ञान, प्रचार इत्यादि, व्यक्ति को प्रचारक नहीं बना सकते, लेकिन प्रार्थना बना सकती है।

प्रेरितों को प्रचार करने की आज्ञा अपूर्ण ही थी, जब तक पैन्तिकुस्त के दिन प्रार्थना द्वारा भरी न गई। प्रार्थनामय सेवा की पहुँच इन सभी क्षेत्रों के पार है। प्रसिद्धि, कारोबारी में लगे लोगों के, धर्मनिरपेक्षता के पार, प्रवचन मंच के आकर्षण के परे, पादरी प्रबंधक के परे। प्रार्थनामय सेवा साधारण तय भव्य, सामर्थी, दिव्य क्षेत्र में है। पवित्रता उसके कार्य का फल है। रूपांतरित हृदय और जीवन, उसके कार्य की वास्तविकता, सच्चाई और प्रकट स्वभाव का अलंकरण करते हैं। परमेश्वर उसका सहयोगी है। उसकी सेवकाई सांसारिक या दिखावटी सिद्धांतों पर नहीं टिकी है। परमेश्वर की बातों को उसने सीखा है और सँभाले रखा है। उसका परमेश्वर के सम्मुख लंबे समय तक अपने लोगों के लिए पूरे मन के साथ विनती करना। वेदना भरे आत्मिक परिश्रम ने उसे परमेश्वर का राजकुमार होने का अधिकार दिया है। व्यापारी का दिखावटीपन, प्रार्थना की प्रबलता के कारण बहुत पहले ही पिघल चुका है।

कइयों की सेवकाई के ओछे फल, दूसरों की निष्क्रियता, उनके प्रार्थना न करने की स्थिति में ही पाई जाती है। कोई भी सेवक बिना प्रार्थना के सफल नहीं हो सकता, और यह प्रार्थना प्राथमिक, हमेशा बनी रहने वाली और सर्वदा बढ़ने वाली होनी चाहिए। पाया गया विषय एवं उपदेश, प्रार्थना का ही प्रतिफल होना चाहिए। मनन का समय भी प्रार्थना में सराबोर होना चाहिए, सारी ज़िम्मेवारियाँ प्रार्थना से भरी हों और आत्मा, प्रार्थना की आत्मा हो। 'मुझे क्षमा करना, क्योंकि मैंने बहुत ही कम प्रार्थना की है।',

मरणासन्न परमेश्वर का जन खेद प्रकट करते हुए कह रहा था। एक दुखी और पछताते हुए प्रचारक ने कहा,'मैं एक महान, गहरे और सच्चे प्रार्थना के जीवन को चाहता हूँ।', स्वर्गवासी बिशप टेट के वचन थे। ऐसा हो हम सभी ऐसा कहें और ऐसा ही पाएँ। परमेश्वर के सच्चे प्रचारक एक बात में दूसरे लोगों से भिन्न थे, वे सभी प्रार्थनामय व्यक्ति थे। वैसे एक प्रचारक दूसरे प्रचारक से भिन्न, परन्तु सभी की धुरी एक ही थी - प्रार्थना। अनेक स्थानों से उन्होने आरंभ किया, विभिन्न मार्गों से यात्रा की, लेकिन एक ही स्थान पर जा मिले, वे प्रार्थना में एक थे। परमेश्वर उनके आकर्षण का केंद्र था। और प्रार्थना वह मार्ग था जो परमेश्वर तक ले जाता था। इन लोगों ने न केवल कभी-कभार प्रार्थना की, न ही थोड़ी सी नियमबद्ध - समय, असमय, लेकिन ऐसे प्रार्थना की कि उसने उनका व्यक्तित्व ही बदल डाला। इन्होंने ऐसे प्रार्थना की कि उसका असर इनके अपने और दूसरों के जीवन पर पड़ा। इनकी प्रार्थना द्वारा कलीसिया का इतिहास बना और अपने जीवन काल में गहरा असर छोड़ा। इन्होंने प्रार्थना में अधिक समय लगाया, इसलिए नहीं कि उनका ध्यान घड़ी की सूईं की ओर या घड़ी के समय की ओर था बल्कि यह उनके लिए इतना प्रभावशाली और मनोहर समय था कि वह इसे छोड़ना ही न चाहते थे। प्रार्थना उनके लिए ऐसी थी, जैसी पौलुस के लिए - निरंतर प्रयत्न में पूर्ण हृदय से आत्मा की पुकार, जैसी याकूब के लिए - द्वंद और प्रबलता, जैसी मसीह के लिए - आँसू और रोना। वे 'सारी प्रार्थनाओं के साथ आत्मा में विनती और अनुनय-विनय में लगे रहे और सचेत हो कर दृढ़ता से लगे रहे।'

'प्रभावात्मक, उत्साही प्रार्थना', परमेश्वर के शक्तिशाली योद्धाओं का महान अस्त्र रहा है। एलिय्याह नबी के विषय में टिप्पणी ' वह व्यक्ति भी हमारे मनोभाव के समरूप था, और उसने जोश के साथ प्रार्थना की कि वर्षा न हो और तीन साल छह

महीने तक धरती पर वर्षा नहीं हुई। उसने दुबारा प्रार्थना की, आकाश ने पानी बरसाया और धरती ने फल दिये।' इस बात को दर्शाती है कि जिन नबियों और प्रचारकों ने अपनी पीढ़ी को परमेश्वर की ओर बढ़ाया, इन अद्‌भुत कार्यों के लिए कैसे उपकरणों का प्रयोग किया।

सामान्य तौर पर व्यक्तिगत प्रार्थनाएँ छोटी होती हैं, जबकि सामूहिक प्रार्थना नियमानुसार छोटी और संक्षिप्त होनी चाहिए। सहसा की गई प्रार्थनाओं का काफ़ी महत्व है लेकिन हमारी व्यक्तिगत प्रार्थना और परमेश्वर के सम्मुख बिताया गया समय उसके मूल्य में खास विशेषता रखता है। परमेश्वर की उपस्थिति में बिताया गया अधिक समय, उसकी सफलता का रहस्य है।

वह प्रार्थना जो प्रभावशाली है, वह परमेश्वर के सम्मुख बिताए गए अधिक समय की उपज है। हमारी छोटी प्रार्थनाओं का केंद्र और दक्षता, हमारी वह लंबी प्रार्थनाएँ हैं जो छोटी प्रार्थनाओं से पहले की गई हैं। कोई प्रभावशाली प्रार्थनाएँ तब तक नहीं कर सकता, जब तक परमेश्वर के सम्मुख लंबे समय तक , लगातार सामर्थी संघर्ष न किया हो।

याकूब को विश्वास की विजय प्राप्त नहीं होती यदि उसने रात भर प्रार्थना में द्वंद न किया होता। परमेश्वर के साथ परिचय जल्दबाज़ी में नहीं हो सकता। परमेश्वर अपनी भेंट लापरवाह और उतावले आने-जाने वालों को नहीं देता। अधिक समय परमेश्वर के साथ रहना ही उसे जानने का रहस्य है और तुम्हें परमेश्वर की ओर प्रभावशाली बनता है। वह अटल विश्वास के ही आगे झुकता है। वह अपनी बहुमूल्य
भेंटें उन्हीं को प्रदान करता है जो उनके लिए अपनी इच्छा प्रकट करते हैं और अपने गांभीर्य स्थिर जीवन के द्वारा दर्शाते हैं कि इसका गुण समझते हैं। मसीह, जोकि इन सब बातों के अलावा दूसरे विषयों में भी हमारे लिए उदाहरण हैं, कई पूरी रातें प्रार्थना में बिताईं। अधिक प्रार्थना करना उनकी आदत थी। स्वाभाविक प्रार्थना करने के लिए उनका का स्वाभाविक स्थान था।

कई लंबे प्रार्थना के समय उसके इतिहास और स्वभाव को दिखाते हैं। पौलुस रात-दिन प्रार्थना में लगा रहा। दानियल को दिन में तीन बार प्रार्थना के लिए कई अति आवश्यक कार्यों से समय निकालना पड़ा। इसमें कोई संदेह नहीं की राजा दाऊद की, सुबह, दोपहर और रात की प्रार्थनाएँ कई बार बहुत लंबे समय तक चलती थीं। हाँलाकि हमें बाईबल के सन्तों के विषय में इस बात का स्पष्ट लेखा नहीं मिलता कि उन्होंने कितना समय प्रार्थना में बिताया, फिर भी इसका संकेत मिलता है कि वह प्रार्थना में काफ़ी समय बिताते थे। और कई अवसरों पर लंबे समय तक प्रार्थना करना उनका रिवाज़ था।

हम यह 'नहीं' चाहते कि कोई यह सोचे कि प्रार्थना का मूल्य केवल उसमें बिताए समय द्वारा आँका जाए। लेकिन हमारा उद्देश्य यह है कि हमारे मन पर यह छाप गहराई से पड़ जाए कि परमेश्वर के साथ अकेले समय बिताना अति आवश्यक है। और यदि यह लक्षण हमने विश्वास द्वारा प्राप्त नहीं किया तो यह जान लें कि हमारा विश्वास कितना कमज़ोर और सतही है।

जिन लोगों के जीवन ने संसार पर गहरा असर डाला, उन्होंने अपने स्वभाव में मसीह का उदाहरण दर्शाया, वे ऐसे थे जो अधिक समय प्रार्थना में परमेश्वर के साथ बिताते और यह उनके स्वभाव का खास लक्षण बन गया। चार्ल्स सिमियों, सुबह चार से आठ बजे तक का समय परमेश्वर को अर्पित करते थे। श्रीमान वैसली हर रोज़ दो घंटे प्रार्थना में बिताते थे। वह सुबह चार बजे उठते थे। एक जन जो उन्हें जानता था लिखता है, 'उन्हें प्रार्थना अत्यंत आवश्यक कार्य दिखता था। जब वह प्रार्थना पश्चात अपने कक्ष से बाहर आते तो उनका चेहरा शांति से भरकर चमक रहा होता।'

जोन फलेचर ने प्रार्थना की साँसों द्वारा दीवार पर चिह्न छोड़े। कभी-कभी वह सारी रात प्रार्थना में बिताते थे, हमेशा, अक्सर और पूरे उत्साह के साथ। उनका पूरा जीवन प्रार्थना शील जीवन था। 'मैं अपनी जगह से नहीं उठूँगा,' उन्होने कहा, ' जब तक में अपना हृदय परमेश्वर की ओर न उठाऊँ।' अपने एक मित्र को वह इस अभिवादन के साथ मिलते थे,' क्या मैं तुम्हें हमेशा प्रार्थना करते मिलता हूँ? '

लूथर ने कहा,'यदि मैं सुबह के दो घंटे प्रार्थना में बिताने में विफल होता हूँ तो शैतान पूरे दिन विजयी होता है।', उनका एक आदर्श वाक्य था, 'जिसने अच्छे से प्रार्थना की है उसने अच्छे से पाठ सीखा है।'

आर्चबिशप लेहटन परमेश्वर के सान्निध्य में इतना रहते थे कि लगता था हमेशा ध्यान में हों। ' प्रार्थना और स्तुति उनका काम और आनंद था।' उनका जीवनी लेखक कहता है, 'बिशप कैन इतना परमेश्वर के साथ रहते थे कि कहा जाता है उनकी आत्मा परमेश्वर में अनुरक्त रहती थी। इससे पहले की घड़ी सुबह के तीन बजाए वह परमेश्वर की उपस्थिति में होते।'

बिशप ऐशबरी कहते हैं,' जहाँ तक संभव हो, 'मैं सुबह चार बजे जागना चाहता हूँ कि दो घंटे प्रार्थना और मनन में लगाऊँ।' सैमुयल रदरफोर्ड, जिनकी भक्ति की सुगंध अभी भी ताज़ा है, परमेश्वर से प्रार्थना में मिलने के लिए सुबह तीन बजे उठते थे।

जोसफ अलीन सुबह चार से आठ बजे तक प्रार्थना में लगे रहते थे। यदि वह यह सुन ले कि कोई व्यापारी उनसे पहले उठकर अपने व्यापार में लगा है तो वह यह कहते,' हाय, यह मेरे लिए कितनी शर्म की बात है। क्या मेरा स्वामी इनके स्वामी से अधिक योग्य नहीं है।' जिसने यह कला भली प्रकार से सीख ली, वह स्वर्ग के अनन्त बैंक से जब जो चाहे ले सकता है।

स्काटलैण्ड के गुणी और पवित्र प्रचारकों में से एक यह कहता है,' मुझे अपने सबसे उपयोगी घंटे परमेश्वर के साथ बिताने चाहिए। यह मेरा

Free On-Line
subscription
Would you like an On-Line subscription to the ***"मृत्युंजय ख्रिस्त"***?
Please visit our web site at:
LEFI.org.

सत्य की परख!

और जब वह घर में प्रवेश कर चुका तो वे अंधे उसके पास आए। यीशु ने उनसे कहा, ' क्या तुम विश्वास करते हो कि मैं यह कर सकता हूँ? ' उन्होंने उस से कहा, 'हाँ, प्रभु।' तब उसने यह कहते हुए उनकी आँखों को स्पर्श किया, 'तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो जाए।' मत्ती (९-२८,२९)'

सबसे फलदायक और योग्य व्यवसाय है और मुझे इसे एक कोने में नहीं फेंकना चाहिए। सुबह छह से आठ तक का समय निर्विघ्न समय है और इसका उपयोग ऐसे ही किया जाना चाहिए। सुबह की चाय के पश्चात का समय मेरे लिए सबसे लाभकारी है और वह परमेश्वर को सर्मपित किया जाना चाहिए। मैं रात को सोने से पहले की प्रार्थना की अच्छी आदत कदापि नहीं छोड़ना चाहता, लेकिन मुझे नींद से सचेत रहना पड़ता है। जब कभी रात को मेरी नींद खुलती थी, मैं प्रार्थना करना आरंभ कर देता। सवेरे नाश्ते के पश्चात थोड़ा समय दूसरों के लिए प्रार्थना और विनती में लगाना चाहिए। 'राबर्ट मक्चैनी का यह प्रार्थना कार्यक्रम था।

यादगार मेथोडिसट समूह, अपनी प्रार्थना की आदत द्वारा हमें लज्जित करते हैं। सुबह चार से पाँच बजे तक व्यक्तिगत प्रार्थना, शाम को पाँच से छह बजे तक व्यक्तिगत प्रार्थना।

जोन वैल्श, अद्भुत और पवित्र स्काटलैण्ड प्रचारक, मानता था कि यदि दिन में आठ या दस घंटे प्रार्थना नहीं की तो उसका दिन व्यर्थ गया। वह रात में पहाड़ी ऊनी कपड़ा अपने पास रखता कि रात में प्रार्थना के लिए उठने पर उसे पहन सके (क्योंकि स्काटलैण्ड देश में अधिक ठंड पड़ती है।) जब उसकी पत्नी उसे धरती पर पड़े प्रार्थना में आंसू बहाते देखती तो शिकायत करती थी। वह उत्तर देता,'हे स्त्री, मुझे तीन हज़ार आत्माओं का लेखा देना है, और मुझे इसका ज्ञान नहीं कि उनमें से कइयों का हाल कैसा है?'

बिशप विल्सन कहते हैं,'हेनरी मारटिन की पत्रिका, प्रार्थना की आत्मा, में अपने काम में लगाया गया समय और उसकी ओर उसका उत्साह, ऐसी पहली बातें थी जिन्होंने मुझे चौंका दिया।'

पायसन ने कठोर लकड़ी के पट्टों को घुटने टेक कर ऐसा घिसा दिया था कि वहाँ पर गहरा गड्ढा हो गया था, न जाने वह कितने घंटे घुटने टेके प्रार्थना में लगे रहते थे। उनका जीवनी लेखक कहता है,'उनका प्रार्थना में तत्पर रहना, चाहे परिस्थिति कैसी भी क्यों न हो, उनके जीवन का स्पष्ट तथ्य है, और यह दर्शाता है कि जो कोई उनकी प्रसिद्धि की बराबरी करना चाहे जान ले कि प्रार्थना करना उसका कर्तव्य है। निःसंदेह उनकी विशिष्ट और लगभग निर्विघ्न सफलता का कारण उनकी उत्साही और उद्दमी प्रार्थनाओं को माना जा सकता है।

'मारकिस देरेन्ती', जिसके लिए मसीह सबसे मूल्यवान था, ने अपने सेवक को निर्देश दिया कि आधे घंटे बाद उसे प्रार्थना से बुला ले। आधे घंटे बाद सेवक ने द्वार के एक छेद से अपने स्वामी का चेहरा देखा। वह ऐसी पवित्रता से भरा था कि सेवक ने उन्हें छेड़ना ठीक न समझा। उनके होंठ हिल रहे थे लेकिन वह बिल्कुल शांत थे। सेवक वहाँ साढ़े तीन घंटे तक प्रतीक्षा करता रहा। तब उसने अपने स्वामी को पुकारा। वह ज़मीन से उठा और बोला कि मसीह के साथ बात करने के लिए आधा घंटा उसके लिए अत्यंत अपर्याप्त था।

ब्रेनर्ड ने कहा,'मुझे अपनी झोंपड़ी में अकेले होना अच्छा लगता है, जहाँ मैं अधिक समय प्रार्थना में बिता सकूँ।' विलियम ब्रैमवेल मैथोडिस्ट आख्यान में, व्यक्तिगत पवित्रता, प्रचार में अद्भुत सफलता और प्रार्थनाओं के चमत्कारी उत्तर पाने के लिए प्रसिद्ध हैं। लगातार घंटों वह प्रार्थना में लगे रहते थे। वह जीवन भर अपने घुटनों पर रहे हैं। वह अपने प्रचार के दौरों को अग्नि की लौ की भाँति पूरा करते थे। वह अग्नि उनके प्रार्थना में समय बिताने के कारण जागृत होती थी। एकांत में अक्सर एक समय की प्रार्थना में लगभग चार घंटे लगा देते थे।

बिशप एन्डरू, हर दिन पाँच घंटे प्रार्थना और उपासना में लगाते थे। सर हेनरी हेवलोक सुबह के पहले दो घंटे परमेश्वर के साथ बिताते थे। यदि पड़ाव छह बजे उठता तो वह चार बजे जाग जाते।

अर्ल क्रेन हर दिन छह बजे जागते थे ताकि पौने आठ बजे की पारिवारिक प्रार्थना के समय से पहले डेढ़ घंटा अध्ययन और प्रार्थना में लगा सकें। डा. जड्सन की प्रार्थना में सफलता का कारण ही उनका अधिक प्रार्थना करना था। इस बात पर वह कहते हैं,' अपने काम को इस तरह से संभालो कि न केवल दो तीन घंटे अराधना में लगा सको बल्कि व्यक्तिगत प्रार्थना और परमेश्वर के साथ समय बिताने में लगा सको। इसकी चेष्टा करो कि दिन में सात बार अपने व्यवसाय और साथियों से दूर हो कर अकेले में अपनी आत्मा को परमेश्वर की ओर उठा सको। दिन का आरंभ आधी रात के बाद कर दो और शांति तथा रात के अँधेरे में कुछ घंटे इस पवित्र काम में समर्पित करो। ऐसा हो कि सवेरा तुम्हें इसी काम में लगा पाए. ऐसा हो कि नौ, बारह, तीन, छह और रात के नौ बजे तुम्हें ऐसा ही पाएँ। ध्यान दो कि तुम्हारा समय कम है और व्यवसाय या दूसरों का साथ तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर से अलग न कर दे।

असंभव, हम कहते हैं, कट्टरपंथी निर्देश। डा. जड्सन ने एक साम्राज्य पर मसीह की छाप छोड़ी और बर्मा के बीचों-बीच परमेश्वर के राज्य की नींव कभी न मिटने वाले पत्थर से डाली। वह सफल हुए, कइयों में से एक, जिन्होंने संसार पर मसीह की गहरी छाप छोड़ी। कई उनसे बढ़कर प्रतिभाशाली और विद्वानों ने ऐसा कुछ नहीं कर दिखाया। उन लोगों का धार्मिक काम मानों रेत में पदचिह्न हों, लेकिन जड्सन ने कठोर पर अपने काम को अंकित किया। इसका रहस्य, गहराई और सहनशक्ति का तथ्य, प्रार्थना में लगाए गए समय में से मिलता है। उन्होंने प्रार्थना के द्वारा लोहे को लाल-गर्म रखा और परमेश्वर की कला और स्थिर रहने वाली सामर्थ ने उसे निखार दिया। कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के लिए टिकने वाला महान काम नहीं कर सकता, जब तक वह व्यक्ति प्रार्थना करने वाला न हो। तथा कोई भी प्रार्थनामय व्यक्ति नहीं हो सकता जब तक वह अधिक समय प्रार्थना में न लगाए।

'क्या यह सत्य है कि साधारण तय प्रार्थना तो आदत अनुसार, नीरस और मशीनी काम है? एक तुच्छ अभिनय जिसमें हमें प्रशिक्षण दिया जाता है, जब तक दबी हुई, संक्षिप्त और दिखावटीपन उसके मुख्य तत्व न बन जाएँ? क्या यह सत्य है कि प्रार्थना, जैसा माना जाता है, अर्ध-निष्क्रिय भावनाओं का नाटक है जो कुछ मिनट या घंटे निस्तेज बहता रहता है, जैसे सरल मनोविलास हो? ' कैनन लिड्डन जारी रखते हैं,'जिन्होंने सचमुच प्रार्थना की है वे उत्तर दें।' वे कभी-कभी प्रार्थना की व्याख्या कुल पिता
याकूब का अनदेखी शक्ति के साथ द्वंद से करते हैं, जिसका फल एक उत्साही जीवन हो, देर रात के घंटों में और यहाँ तक की पो फटने तक चलता रहे। कभी-कभी वे इसका उल्लेख साधारण विनती, संत पौलुस के अनुसार संगठित संघर्ष के साथ करते हैं। वह प्रार्थना के समय अपनी दृष्टि, गतसमनी के, महान बीच-बचाव करने वाले, त्याग और त्यागे जाने की वेदना में धरती पर गिरती लहू की बूँदों पर रखते हैं।

सफल प्रार्थना का सारांश - आग्रह करना है। आग्रह का अर्थ स्वप्न नहीं बल्कि टिकने वाला कार्य है। यह ख़ासकर प्रार्थना के द्वारा कि स्वर्ग का राज्य हिंसा सहता है और प्रबल उसे सामर्थ से प्राप्त करता है। स्वर्गीय बिशप हेमिलटन की यह कहावत थी,' कोई भी व्यक्ति प्रार्थना के द्वारा कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि वह इसे एक काम की भाँति न माने, जिसके लिए तैयारी की आवश्यकता होती है। तथा पूरे उत्साह के साथ उन विषयों की समान जो हमारे अनुसार अति आवश्यक और रुचि पूर्ण हैं, उनमें पूर्ण हृदय से न लगे रहें।'
- ई एम बाउण्ड।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दिजिए।